निबंध रचना
10 वी कक्षा के लिए

1.बढती हुई जनसंख्या की समस्या

स्वतंत्र भारत को अपने आर्थिक विकास के लिए जिन समस्याओं का सामना करना पड रहा है, उनमें जनसंख्या का तीव्रगति से बढना प्रमुख समस्या है। आज भारत की जनसंख्या लगभग ९० करोड है। यह संसार में चीन की जनसंख्या के बाद दूसरे नंबर पर है। सन १९४७ ई.में भारत विबाजन के फलस्वरूप लाखों शरणार्थियों के भारत आगमन के कारण तथा उसके बाद भी विदेशों से आकर भारत में बसनेवाले लोगों के कारण भारत की जनसंख्या तीव्रगति से बढी है। ये तो बाह्य कारण है। आन्तरिक कारणों में,

१) जन्मदर में वृद्धि तथा मृत्युदर में कमी।
२) चिकित्सा तथा स्वास्थ्य सुविधाओं में निरंतर सुधारा।
३) शिशु मृत्युदर में कमी।
४) पर्याप्त खाद्यपूर्ति तथा छोटी उम्र में ब्याह।
५) गर्म जलवायु व अनिवार्य विवाह।
६) अशिक्षा व अन्धानुकरण के कारण परिवार नियोजन साधनों का समुचित उपयोग न होना आदि।

भारत में अत्यंत तीव्रगति से बढती हुई जनसंख्या के दुष्परिणाम अनेक है। वे हैं-

१)हर व्यक्ति का आय का न बढना।
२)जीवन स्तर में निरंतर गिरावट।
३) औद्योगिक उत्पादन के लिए पूँजी की कमी।
४) देश में बेरोजगारी लगातार बढते जाना।
५) खाद्य सामग्री का अभाव होना।
६) वस्तुओं की कीमती में तीव्र वृद्धि का होना आदि।

जनसंख्या की वृद्धि से होनेवाली समस्याओं से छुटकारा पाना हो तो,

१) हमें हमारे देश की बढती जनसंख्या पर छुटकारा अंकुश लगाना होगा।
२) लोगों में परिवार को छोटा रखने की चेतना जागृत करना।
३) विवाह की न्यूनतम आयु निश्चित करना।
४) शिक्षा व नारी शिक्षा को प्रोत्साहन देना।
५) लोगों के रहन-सहन के स्तर को उन्नत करना।
६) परिवार कल्याण केन्द्रों का विस्तार करना आदि विशयों पर ध्यान लगा देना चाहिए तथा उनको आचरण में लाना चाहिए।

2.पर्यावरण की रक्षा

प्रस्तावना: हमारे चारों ओर दिखाई देनेवाले हरे-भरे पेड़-पौधे, नदी-पर्वत, पशु-पक्षि आदि सभी मिलकर पर्यावरण कहा जाता है। पर्यावरण कई कारणों से दूषित हो जाता है। पर्यावरण मुख्य रूप से तीन प्रकारों से दूषित हो जाता है। वे हैं-

१) वायुमालिन्य
२) जलमालिन्य
३) शब्दमालिन्य

पर्यावरण प्रदूषण के कारण :

पर्यावरण प्रदूषण के कई कारण है। इसका प्रमुख कारण बढती हुई जनसंख्या है। वृक्ष हमारे लिए प्राणवायु का संप्रसार करते हैं। आजकल मनुष्य अपनी स्वार्थ की पूर्ति के लिए वृक्षों को अंधा-धुंध काट रहा है। इस कारण ,पर्यावरण में प्राणवायु (आक्सीजन) कम होता जा रहा है। कारखानों से, वाहनों से निकलनेवाले धुँए से हवा प्रदूषित हो रही है। इस कारण से साँस से संबन्धित रोग आ रहे हैं।

हमारे जीवन में पानी का अधिक महत्व है। कल-कारखानों के विषैला पदार्थ , नगरों की गन्दगी से जल प्रदूषण फैल रहा है। ये सभी पदार्थ नदियों में छोडे जा रहे हैं। इससे पेट सम्बन्धी अनेक रोग आते हैं। कल-कारखानों की, वाहनों की आवाज से ध्वनि प्रादूषण फैल रहा है। इस कारण से कई मानसिक तथा शारीरिक बीमारियाँ हमें घेर रही है।

पर्यावरण प्रदूषण के निवारण के उपाय :

पर्यावरण प्रदूषण के निवारण के उपाय निम्नलिखित हैं-

१) सबसे पहले बढ़ती हुई जनसंख्या पर रोक लगाना चाहिए।
२) पेड-पौधों को ज्यादा लगाना चाहिए।
३) कारखानों से निकलनेवाली कचरे को नदियों में नहीं मिलाना चाहिए।
४) वाहनों से निकलनेवाले शोर को कम करना चाहिए।
५) कल-कारखानों ,राकटों तथा वाहनों से निकलनेवाले धुँए को कम करना चाहिए।
६) हमारे चारों तरफ के परिसर को शुद्ध तथा साफ रखना चाहिए।
७) स्वास्थ्य के महत्व के बारे में लोगों को जानकारी देना चाहिए।
८) औद्योगिक क्रांति पर रोक लगाना चाहिए।

उपसंहार : पर्यावरण में फैले हुए प्रदूषण को रोककर हम अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं। पर्यावरण हमारा रक्षा कवच है। इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

3.इंटरनेट-क्रांति

प्रस्तावना: आज का युग इंटरनेट युग है। बड़े बूड़ों से लेकर छोटे बच्चों तक सब पर इस इंटरनेट –क्रांति का असर पड़ा है।

अर्थ: इंटरनेट अनगिनत कंप्यूटरों के कई अंतर्जालों का एक दूसरे से संबंध स्थापित करने का जाल है। आज इनसान के लिए खान-पान जितना जरूरी है, इंटरनेट भी उतना ही आवश्यक हो गया है।

इंटरनेट से लाभ: कुछ साल पहले दूर रहते रिश्तेदार या दोस्तों को कोई खबर देनी पड़ती तो चिट्ठी लिखनी पड़ती थी या दूरभाष का उपयोग करना पड़ता था। इससे समय और पैसे दोनों का अधिक व्यय होता था। लेकिन इंटरनेट व्दारा पल भर में, बिना ज्यादा खर्च किए कोई भी विचार हो, स्थिर चित्र हो< दुनिया के किसी भी कोने में भेजना मुमकिन हो गया है। इंटरनेट व्दारा घर बैठे-बैठे खरीदारी कर सकते हैं। कोई भी बिल भर सकते हैं। इससे दुकान जाने और लाइन में घंटों खड़े रहने का समय बच सकता है। इंटरनेट –बैंकिंग व्दारा दुनिया की किसी भी जगह पर चाहे जितनी भी रकम भेजी जा सकती है।

इंटरनेट की सहायता से बेरोज़गारी को मिटा सकते हैं। भारत में आई.टी (इनफारमेशन टैक्नोलजी) और आई.टी.ई.एस.(इनफारमेशन टैक्नोलजी एनेबल्ड सर्विसेस) संस्थाओं का प्रवेश इंटरनेट से संभव हुआ है। इनसे अनगिनत लोगों को रोज़गार मिला है और सिर्फ हमारे देश में ही नहीं, कई देशों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है।

"सोशल नेटवर्किंग" एक क्रातिकारी खोज है, जिससे दुनिया भर के लोगों को एक जगह पर ला खड़ा कर दिया है। सोशल नेटवर्किंग के कई साइट्स हैं, जैसे-फेसबुक, आरकुट,ट्विट्टर, लिंकडइन आदि। इन साइटों के कारण देश-विदेश के लोगों की रहन-सहन, वेष-भूषा, खान-पान के अलावा संस्कृति, कला आदि का प्रभाव शीघ्रातिशीघ्र हमारे समाज पर पड़ रहा है।

ई-गवर्नेन्स व्दारा सरकार के सभी कामकाज का विवरण, अभिलेख, सरकारी आदेश आदि को यथावत लोगों को सूचित किया जाता है। इससे प्रशासन पारदर्शी बन सकता है।

इंटरनेट सचमुच एक वरदान है। उसने जीवन के हर क्षेत्र में अपना कमाल दिखाया है। जैसे- चिकित्सा, कृषि, अंतरिक्ष ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा आदि। यहाँ तक कि देश के रक्षादलों की कार्यवाही में इंटरनेट का बहुत बड़ा योगदान है।

इंटरनेट से दुष्परिणाम: इंटरनेट एक ओर वरदान है तो दूसरी ओर वह अभिशाप भी है। इंटरनेट की वजह से पैरसी, बैंकिंग फ्राड, हैकिंग(सूचना/खबरों की चोरी) आदि बढ़ रही हैं। मुक्त वेब साइट, चैतिंग आदि से युवा पीढ़ी ही नहीं बच्चे भी इंतरनेट की कबंध बाँहों के पाश में फँसे हुए हैं। इससे वक्त का दुरुपयोग होता है और बच्चे अनुपयुक्त और अनावश्यक जानकारी हासिल कर रहे हैं।

उपसंहार : इंटरनेट से अनेक दुष्परिणामों के होते हुए भी उससे अनेक लाभ भी है। उन्हें पहचानकर हमें उसका सही उपयोग कर लेना चाहिए। इंटरनेट से सचेत रहते है तो उसका सही लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

4. पर्यटन का महत्व

कौतूहल और जिज्ञासा मानव की दो मूल प्रवृत्तियाँ है।मानव-मन परिवर्तन चाहता है। परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है।मनुष्य भी हर दिन कुछ नया चाहता है, इसी कारण वह नये-नये जगहों, नये-नये लोगों की जानकारी आदि के लिए वह सदैव आतुर रहता है। इसी उत्सुकता के लिए वह पर्यटन करता है। पर्यटन का अर्थ है- विभिन्न स्थानों का घूमना।पर्यटन से मनोरंजन ही नहीं होता, वरन वह वरदान भी सिद्ध हो जाता है। आजकल विद्यालय में पर्यटन के महत्व को जानकर उसे शिक्षा का अंग माना गया है।

एक स्थान पर रहते-रहते व्यक्ति का मन ऊब जाता है। पर्यटन से मनोरंजन होता है। मनोरंजन से चित्त प्रसन्न रहता है। प्राकृतिक वातावरण, स्वच्छ एवं शुद्ध जलवायु से स्वास्थ्य बढता है। पर्वतीय प्रदेशों का शांत वातावरण उसे प्रकृति के समीप लाता है उसका मन खुशी से भर जाता है और उसकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। पर्यटन से मनुष्य व्यवहार कुशल, स्वावलंबी, धैर्यवान बनता है। विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलने के बाद उसके व्यक्तित्व में विकास होता है मन मस्तिष्क में नवीनता लाने के लिए विद्यार्थियों को अवश्य पर्यटन में ले जाना चाहिए।

पुस्तकीय ज्ञान से मानव-जीवन में व्यावहारिकता नहीं आती। पर्यटन द्वारा पुस्तकीय ज्ञान को व्यावहारिकता प्राप्त होती है। प्रत्येक क्षेत्र और देश के व्यवहार तथा संस्कृति में अंतर होता है। उनके साथ मिलकर व्यवहार करने का ज्ञान पर्यटन के बाद ही हो पाता है। विभिन्न लोगों के संपर्क में आने पर मानवीय व्यवहार को समझने की क्षमता बनी रहती है। पर्यटन के समय आनेवाले परिस्थितियों के कारण उसे जो अनुभव प्राप्त होते हैं, वे स्थाई तथा अधिक प्रभावी होते हैं। इस प्रकार पर्यटन से विश्वशांति के प्रयासों में सहायता मिलती है। सद्भावना बढ़ती है। इसलिए परस्पर स्नेह-भावना और विश्व-बंधुत्व की कल्पना करने में पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

पर्यटन जीवन के यथार्थ, संसार की राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थिति तथा कला-कौशल का ज्ञान प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सद्भाव तथा मैत्री की वृद्धि में पर्यटन का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। सफल पर्यटन के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आ सकती हैं। सभी व्यक्ति पर्यटन के बढ़े हुए व्यय को वहन नहीं कर सकते। जलवायु अनुकूल न हो पाने के कारण लोग बीमार भी हो जाते हैं। कभी-कभी जान-माल से हाथ भी धोना पड़ जाता है। शारीरिक, आर्थिक तथा मानसिक रूप से क्षति भी उठानी पड़ती है; अतः पर्यटन श्रमसाध्य तथा साहसिक कार्य है।

प्राचीनकाल में लोगों को यातायात की उपलब्ध नहीं थी, फिर भी वे पर्यटन के बहाने भ्रमण करते थे। ये पर्यटन कष्टदायक होती थीं। आज जब आधुनिक साधनों ने पर्यटन को सुलभ तथा मार्गों को सुगम्य बना दिया है, तब भी पर्यटन के प्रति लोगों में दिलचस्पी बहुत अधिक नहीं है। इसका कारण आर्थिक परिस्थिति हो सकता है। यदि देश की आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाए तो देशवासियों में पर्यटन के प्रति स्वाभाविक रुचि उत्पन्न हो सकती है।

5.महँगाई की समस्या

"हमारी चालीस प्रतिशत जनता अभी भी गरीबी के स्तर से नीचे जीवन बिता रही हैं और महँगाई इतनी अधिक बढ़ गई है, जितनी पहले कभी नहीं बढ़ी थी।"_ वी.वी.गिरि

विषय प्रवेश: भारत की बहुत-सी आर्थिक समस्याओं में महँगाई की समस्या एक प्रमुख समस्या है। वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि का क्रम इतना तीव्र है कि आप जब किसी वस्तु को दोबारा खरीदने जाते हैं तो वस्तु का मूल्य पहले से अधिक बढ़ा हुआ होता है।

महँगाई के कारण

महँगाई क्यों बढ़ती है?-वस्तुओं के मूल्यों में व्रुद्धि के बहुत से कारण हैं। इन कारणों में अधिकांश आर्थिक हैं। कुछ कारण ऐसे भी हैं,जो व्यवस्था से संबंधित हैं अथवा सामाजिक हैं। ये कारण प्रायः इस प्रकार हैं-

क) जनसंख्या में तेजी से वृद्धि- भारत में जितनी तेजी से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, उतनी तेजी से वस्तुओं का उत्पादन नहीं हो रहा है। इसका स्वाभाविक परिणाम यह है कि अधिकांश वस्तुओं के मूल्यों में निरंतर वृद्धि हुई है।

ख) कृषि उत्पादन-व्यय में वृद्धि- हमारा देश कृषि-प्रधान है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर हैं। गत अनेक वर्षों से खेतों में काम आनेवाले उपकरणों के मूल्यों में वृद्धि हुई है। इस कारण उत्पादित वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होती जा रही है

ग) कृत्रिम रूप से वस्तुओं की पूर्ति में कमी-वस्तुओं का मूल्य माँग और पूर्ति पर आधारित है। जब बाजार में वस्तुओं की पूर्ति कम हो जाती है तो उनके मूल्य बढ़ जाते हैं। अधिक मुनाफा कमाने के लिए व्यापारी वस्तुओं का कृत्रिम अभाव पैदा कर देते हैं,जिसके कारण महँगाई बढ़ जाती है।

व्यापारी अपनी वस्तुओं की कृत्रिम कमी उत्पन्न कर देते हैं। इसके कारण वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि हो जाती है। महँगाई को दूर करने के लिए सुझाव- महँगाई को दूर करने के लिए सरकार को समयबद्ध कार्यक्रम बनाना होगा। किसानों को सस्ती कीमत पर खाद, बीज और उपकरण उपलब्ध कराने होंगे, ताकि कृषि-उत्पादन की कीमतें कम हो सकें। साथ ही खाद्य-पदार्थों की वितरण-प्रणाली में भी सुधार करना होगा, अथवा घाटे को पूरा करने के लिए नए नोट छापने की प्रणाली को बंद करना होगा। जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के लिए निरंतर प्रयास करने होंगे ताकि वस्तुओं का सही बँटवारा हो सके। सहकारी वितरण-संस्थाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इन सबके लिए प्रशासन को चुस्त व दुरुस्त बनाना होगा और कर्मचारियों को पूरी निष्ठा तथा कर्तव्यपरायणता के साथ कार्य करना होगा।

उपसंहार- महँगाई की वृद्धि के कारण हमारी अर्थव्यवस्था में जटिलताएँ उत्पन्न हो गई हैं। घाटे की अर्थव्यवस्था ने इस कठिनाई को और ज्यादा बढ़ावा है। यद्यपि सरकार की ओर से किए जाने वाले प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रयासों द्वारा महँगाई की इस प्रवृत्ति को रोकने का प्रयास निरंतर किया जा रहा है, तथापि इस दिशा में अभी तक पूरी सफलता नहीं मिल पाई है।

यदि समय रहते महँगाई के इस दैत्य को वश में नहीं किया गया तो हमारी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी और हमारी प्रगति के सारे रास्ते बंद हो जाएँगे। भ्रष्टाचार अपनी जड़ें जमा लेगा और नैतिक मूल्य पूरी तरह समाप्त हो जाएँगे।

6. बेरोजगारी

"बेरोजगार व्यक्ति को कष्ट तो पहुँचता ही है, साथ ही उसका नैतिक पतन भी होता है, जो साधारण रूप से समाज को ग्रस्त कर लेता है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी बढ़ता ही जाता है। इस प्रकार के असंतुष्ट नवयुवकों का अधिक संख्या में बेकार होना देश की राजनीतिक स्थिरता के लिए भी हानिकारक और भयंकर है।"

प्रस्तावना- क्या आपने कभी उस नवयुवक के चेहरे को देखा है, जो विश्वविद्यालय से अच्छी डिग्री लेकर बाहर आया है और रोजगार की तलाश में भटक रहा है? क्या आपने कभी उस युवक की आँखों में झाँककर देखा है, जो बेकारी की आग में अपनी शिक्षा-दीक्षा को जलाकर राख कर देने के लिए विवश है? क्या कभी आपने उस नौजवान की पीड़ा का अनुभव किया है, जो दिन में रोजगार-दफ्तरों में चक्कर लगाता है और रात में देर तक अखबारी विज्ञापनों में अपनी नौकरी की खोज करता है? घर में जिसे निकम्मा कहा जाता है और समाज में आवारा; किंतु अपनी मौन-व्यथा सुनाता है।

बेकारी: एक प्रमुख समस्या- भारत की आर्थिक समस्याओं में बेरोजगारी एक प्रमुख समस्या है। वस्तुतः यह एक ऐसी बुराई है, जिसके कारण उत्पादक मानव-शक्ति ही नहीं नष्ट होती, वरन देश का भावी आर्थिक विकास भी अवरुद्ध होता है। जो श्रमिक अपने कार्य के द्वारा देश के आर्थिक विकास में सक्रिय सहयोग दे सकते थे, वे कार्य के अभाव में बेकार रह जाते हैं। यह स्थिति हमारे आर्थिक विकास में बाधक है।

बढ़ती बेकारी के बोलते आँकड़े- इस देश में ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत अधिक है, जो लंबे समय से रोजगार की खोज में हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार देश में ३१ दिसंबर १९७७ को रोजगार दफ्तरों के रजिस्टरों पर नौकरी ढँढने वाले एक करोड़ लोगों के नाम दर्ज थे। यह तो केवल रोजगार दफ्तरों की संख्या है। सन १९८५ तक यह संख्या बढ़कर ३ करोड़ के लगभग होगई थी। हमारे यहाँ लगभग ६० लाख लोग प्रतिवर्ष बेरोजगार की पंक्ति में खड़े हो जाते हैं। इनमें ग्रामीण बेरोजगारों की संख्या सबसे अधिक है। आशय यह है कि चाहे ग्रामीण हो अथवा शहरी, शिक्षित हो अथवा अशिक्षित, बेरोजगारों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

(क) जनसंख्या में वृद्धि- बेकारी का प्रमुख कारण है- जनसंख्या में तीव्रगति से वृद्धि।विगत कुछ दशकों में भारत में जनसंख्या का विस्फोट हुआ है। देश की जनसंख्या में प्रतिवर्ष २.५ प्रतिशत की वृद्धि हो जाती है, जबकि इस दर से बेकार व्यक्तियों के लिए रोजगार की व्यवस्था नहीं हो पाती है।

(ख) दोषपूर्ण शिक्षा-प्रणाली- भारतीय शिक्षा सैद्धांतिक अधिक है। वह व्यावहारिकता से शून्य है। इसमें पुस्तकीय ज्ञान पर ही विशेष ध्यान दिया जाता है। फलतः यहाँ के स्कूल-कालेजों से निकलने वाले छात्र दफ्तर के बाबू ही बन पाते हैं। वे निजी उद्योग-धंधे आरंभ नहीं कर पाते।

(ग) कुटीर उद्योगों की उपेक्षा- ब्रिटिश सरकार की कुटीर उद्योग-विरोधी नीति के कारण देश में उद्योग-धंधों का पतन हो गया। फलस्वरूप अनेक कारीगर बेकार हो गए। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात भी कुटीर उद्योगों के विकास की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया, अतः बेकारी में निरंतर वृद्धि होती गई।

(घ) औद्योगीकरण की धीमी प्रक्रिया- पंचवर्षीय योजनाओं में देश के औद्योगिक विकास के लिए प्रशंसनीय पग उठाए गए हैं, फिर भी पूरी तरह देश का औद्योगीकरण नहीं किया जा सका है। इस कारण बेकार व्यक्तियों के लिए रोजगार नहीं जुटाए जा सके हैं।

(ङ) प्राकृतिक साधनों का अपूर्ण उपयोग- हमारा देश प्राकृतिक साधनों से संपन्न है। यहाँ की कृषि पूँजी एवं तकनीक के अभाव में इनका पूरा-पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है।

(च) कृषि का पिछड़ापन-भारत की लगभग ७२ प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। यहाँ की कृषि अत्यंत पिछड़ी हुई दशा में है; अतः बेकारी की समस्या व्यापक हो गई है।

(छ) कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों की कमी- हमारे देश में कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों का अभाव है; अतः उद्योगों के संचालन के लिए विदेश से प्रशिक्षित कर्मचारी बुलाने पड़ते हैं। यही कारण है कि देश में अनेक अकुशल एवं अप्रशिक्षित व्यक्ति बेकार हो जाते हैं।

बेकारी दूर करने के उपाय

निम्नलिखित उपाय बेकारी को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं-

(क) जनसंख्या-वृद्धि पर नियंत्रण- जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि बेकारी का मूल कारण है। अतः इस पर नियंत्रण आवश्यक है। जनता को परिवार-नियोजन का महत्व समझाते हुए उसमें व्यापक चेतना जाग्रत करनी चाहिए।

(ख) शिक्षा-प्रणाली में व्यापक परिवर्तन- शिक्षा को व्यवसायोन्मुख बनाया जाना चाहिए। शिक्षा में शारीरिक श्रम को उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

(ग) कुटीर उद्योगों का विकास- कुटीर उद्योगों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

(घ) औद्योगीकरण- देश में व्यापक स्तर पर औद्योगीकरण किया जाना चाहिए। विशाल उद्योगों की अपेक्षा लघुस्तरीय उद्योगों को अधिक महत्व दिया जाए।

(ङ) सहकारी कृषि- कृषि के क्षेत्र में अधिकाधिक व्यक्तियों को रोजगार देने के लिए सहकारी कृषि को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

(च) सहायक उद्योगों का विकास- मुख्य उद्योगों के साथ सहायक उद्योगों का भी विकास करना चाहिए। जैसे-कृषि के साथ पशु-पालन आदि के द्वारा ग्रामीणजनों को बेकारी से मुक्त किया जा सकता है।

(ज) सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन- श्रमिक वर्ग में गतिशीलता का संचार किया जाना चाहिए, ताकि जाति पर आधारित व्यवसाय से उत्पन्न होने वाली बेकारी को दूर किया जा सके। समाज में ऊँच-नीच तथा छुआछूत की बुराई को भी समाप्त किया जाना चाहिए।

उपसंहार- हमारी सरकार बेकारी के प्रति जागरूक है और इस दिशा में उसने महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। परिवार-नियोजन, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, कच्चा माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की सुविधा, कृषि-भूमि की हदबंदी, नए-नए उद्योगों की स्थापना, अप्रैंटिस योजना, प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना आदि अनेकानेक कार्य ऎसे हैं, जो बेरोजगारी को दूर करने में एक सीमा तक सहायक सिद्ध हुए हैं। इनको और अधिक विस्तृत तथा अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। इस संबंध में वर्तमान सरकार की कोई स्पष्ट नीति नहीं है और न ही वह इस ओर ध्यान देने की स्थिति में है। अतः आनेवाले वर्षों में बेरोजगारों का प्रतिशत अधिक बढ़ जाए इस बात को मकारा नहीं जा सकता। अतः बेरोजगारी दूर करने का एकमात्र उपाय है-सामाजिक जागरण, जिससे बेरोजगारी को सरोजगार की ओर प्रेरित किया जा सके।

7 . नागरिक के कर्तव्य

प्रस्तावना : "राष्ट्र का निर्माण चट्टानों तथा वृक्षों से नहीं वरन उसके नागरिकों के चरित्र से होता है।"-यह कथन पूर्णतः सत्य है।अनुशासित नागरिक ही देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर करते हैं।"नागरिक"शब्द राष्ट्र के सदस्यत्व का संकेत है।राज्य के उगम के साथ नागरिक शब्द भी उदित हुआ। नागरिक का अर्थ है "राष्ट्र की प्रजा।" अरिस्टाटल के अनुसार "राज्य की राजनीति,प्रशासन और न्यायांगीय कार्यों में भाग लेनेवाले सदस्य ही नागरिक है।" उस समय स्त्रीयों को नागरिक का हक नहीं दिया गया था।लेकिन आधुनिक विचारधारा में एक राज्य में निवास करनेवाले स्त्री और पुरुष सब उसके नागरिक हैं। सरकार के कार्यों में भाग ले या न ले पर वे नागरिक हैं।

व्यक्ति जन्म से किसी देश का नागरिक हो सकता है, या फिर अन्य प्रकार से उस देश की नागरिकता प्राप्त कर सकता है। किसी भी राष्ट्र या देश की सच्ची शक्ति उसके नागरिकों में हैं। यदि वे विवेकशील, कर्मशील, स्वस्थ, बुद्धिमान, आदर्श और समृद्ध हैं तो वह देश भी आदर्श और महान होता है। एक संगठित, शक्तिशाली और आदर्श देश के निर्माता उसके नागरिक ही हैं।

एक आदर्श नागरिक का जीवन अनुकरणीय होता है। उसका ऊँचा आदर्श और आचरण होता है। वह अधिकारों से अधिक अपने कर्तव्यों का ध्यान रखता है, उन्हें प्राथमिकता देता है। उसके लिए राष्ट्र पहले है और अन्य कुछ उसके बाद। वह पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय दायित्वों को बड़ी जिम्मेदारी से निभाता है। वह अपने देश के नियम, कानूनों का कड़ाई से पालन करता है, और दूसरों को भी ऎसा करने के लिए प्रेरित करता है। न वह निकम्मा और निठल्ला होता है और न कामचोर। वह निरंतर परिश्रम करके देश, समाज व अपने परिवार की समृद्धि में सहयोग देता है। वह कभी करों की चोरी नहीं करता है। वह देश के कानूनों को भलीभाँति जानता है और उनका पालन करता है।

एक आदर्श नागरिक को अपने देश,समाज,संस्कृति व इतिहास पर गौरव होता है। वह राष्ट्रभक्त होता है तथा सदा अनुशासन,शांति व व्यवस्था बनाये रखने में सहयोग करता है।

नागरिक के कर्तव्य : भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि-

१)संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों,संस्थाओं,राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।

२) भारत की प्रभुता,एकता और अखण्ड़ता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें।

३) देश की रक्षा करें और आवाहन किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।

५)भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म,भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों। ऎसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रीयों के सम्मान के विरुद्ध है।

६)हमारी सामाजिक संस्कृति की, गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करें।

७)प्राकृतिक पर्यावरण जिसके अंतर्गत वन,झील,नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखें।

उपसंहार: राष्ट्र से हम अनेक लाभों को पाना चाहते हैं। उसी प्रकार राष्ट्र के लिए कुछ करना हम सभी नागरिकों का कर्तव्य होता है। सरकार के उद्देश्य और मंजिल में यश पाना है तो नागरिकों को सहयोग देना बहुत जरूरी है।